आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

- प्रेरणा बड़थ्वाल, ७ अ
नालन्दा सदन

नारी का करो सम्मान, तभी बनेगा देश महान

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। किंतु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं, उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे 'भोग की वस्तु' समझकर आदमी 'अपने तरीके' से 'इस्तेमाल' कर रहा है। यह बेहद चिंताजनक बात है। संस्कृत में एक श्लोक है- 'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:। अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाए, इस पर विचार करना आवश्यक है।

माता का हमेशा सम्मान हो, मां अर्थात माता के रूप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानी जननी, मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। मां देवकी (कृष्ण) तथा मां पार्वती (गणपति/ कार्तिकेय) के संदर्भ में हम यह कह सकते हैं ।

किंतु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है। यह चिंताजनक पहलू है। सब धन-लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। जन्म देने वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, जो वर्तमान समय में बहुत कम हो गया है। यह सवाल आजकल यक्षप्रश्न की तरह चारों ओर पांव पसारता जा रहा है। इस बारे में नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करना चाहिए।

अगर आजकल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि लड़कियां आजकल हर क्षेत्र में बाजी मार रही हैं। इन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है । विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं। किसी समय इन्हें कमजोर समझा जाता था, किंतु इन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है। इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाना चाहिए।

- वाणी विल्सन
11 विज्ञान वर्ग

जीवन दायिनी

- शुभम् शर्मा, 7 ब

नदियों को बहुत ही ज्यादा कल्याणकारी और महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत के अधिकतर तीर्थ स्थल नदियों के किनारे स्थित है। सबसे अधिक तीर्थ स्थल माता गंगा नदी के किनारे बनाए गए हैं।

नदियां हमारे देश में आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक और अन्य कई रूपों में काफी ज्यादा सहायक सिद्ध हुई है। नदियां हमें जल प्रदान करने के साथ-साथ शुद्ध वातावरण भी प्रदान करती हैं। इसके साथ साथ नदियों के जल से ज्यादा से ज्यादा किसान अपने खेतों की सिंचाई भी करते हैं। नदियां लोगों को रोजगार भी प्रदान करती हैं। इसमें मछली पालन और नौका विहार का प्रमुख रोजगार है।

वर्तमान समय में नदियां काफी ज्यादा दूषित हो रही थी, इसीलिए भारत सरकार के द्वारा नदियों को शुद्ध कराने के लिए बहुत से आंदोलन और योजनाएं भी चलाई गई हैं।

दोस्तों भारत में नदियों को देवी रूप माना जाता है और इसी कारण से इन्हें माता कह कर पूजा भी जाता है। भारत में नदियों का महत्व बहुत ही बड़ा है और सबसे बड़ा महत्व धार्मिक इतिहास को रोमांचक बनाने में रहा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भारत को एक तरह से नदियों का देश नाम से भी पुकारा जाता है।

भारत में लोगों की हमेशा से यही मान्यता रही है,कि पवित्र नदियों में स्नान करने से उनके पाप धुल जाते हैं और वे लोग अपने जीवन की नई शुरुआत भी कर सकते हैं। भारत में पुराने समय के बहुत से ऋषियों एवं मुनियों ने इन्हीं पवित्र नदियों के किनारे बैठकर तपस्या द्वारा ज्ञान की प्राप्ति की।अनेक वेदों की रचना इन्हीं नदियों के किनारे बैठकर की गई।

- स्नेहा शर्मा, ११ विज्ञान वर्ग
तक्षशिला सदन

नवरात्रि

नवरात्रि देवी दुर्गा के नौ अवतारों या स्वरूपों की पूजा करने का सबसे प्रसिद्ध हिंदू त्योहार है, जिसे शक्ति या देवी के रूप में भी जाना जाता है। यह त्योहार एक बार वसंत के दौरान चैत्र नवरात्रि और शरद ऋतु के दौरान शरद नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। शरद नवरात्रि अश्विन के महीने के दौरान मनाई जाती है, जो आमतौर पर सितंबर या अक्टूबर में आती है।

नवरात्रि अत्यंत भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है। चैत्र नवरात्रि के पहले दिन को हिंदू नव वर्ष की शुरुआत के रूप में भी माना जाता है। यह देवी दुर्गा को समर्पित है, जिन्हें नव दुर्गा के रूप में नौ दिव्य रूपों में पूजा जाता है। दुनिया भर में लोग इन दिनों के दौरान देवी की पूजा करते हैं। लोग छोटी कन्याओं के पैर छूते हैं और उन्हें देवी की तरह मानते हैं। नवरात्रि हिंदू धर्म का एक बहुत ही पवित्र त्योहार है।शरद नवरात्रि अक्टूबर में आती हैं। इसे सभी नवरात्रियों से अधिक लोकप्रिय और महत्वपूर्ण नवरात्रि माना जाता है। शरद नवरात्रि के दसवें दिन, दशहरा या विजय दशमी को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है।

- अदिति भार्गव, आठ अ
तक्षशिला सदन

- अदिति, 8 अ

अच्छाई की कीमत

एक बार की बात है। एक गांव मे राणा जी नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत अच्छे स्वभाव का था पर वह अनाथ था उसे हमेशा अपने अनाथ होने पर दुख होता था। एक दिन वह ऐसे ही नदी के किनारे घूम रहा था। तभी उसे नदी में एक बच्चा मदद के लिए पुकारता हुआ मिला। वह सोचने लगा कि उस बच्चे की मदद कैसे की जाए। तभी उसे एक नाव दिखती है। वह उस नाव के मालिक से विनती करता है कि वे उसे अपनी नाव दे दें ताकि वह उस बच्चे को बचा सके।

पहले तो उस नाव का मालिक नहीं मानता पर काफी बार विनती करने के बाद वह मान जाता है। उसके बाद राणा जी उस नाव को लेकर उस बच्चे को बचाने चला जाता है। उसे नाव चलानी नहीं आती थी पर किसी तरह वह बच्चे तक पहुंच जाता है। उसे बचाता है और किसी तरह किनारे तक पहुंच जाता है और इस बच्चे को उसके परिवार के पास पहुंचा देता है। उसके परिवार वाले उस बच्चे को पाकर बहुत खुश होते है।

वह भी गरीब थे। तो सोचने लगे कि वह राणा जी का उपकार कैसे उतारेंगे। वह कुछ बोलते उससे पहले ही राणा जी ने उनसे बोला, "मुझे पता है कि आप मुझे उपहार मे कुछ देना चाहते हैं। पर मुझे कुछ नहीं चाहिए। आपको मुझे कुछ देने की जरूरत नहीं है "। तभी उस बच्चे के पिता बोलते हैं," ऐसे कैसे नहीं? बेटा तुमने हमारे बच्चे की जान बचाई है। तुम जो मांगोगे हम वह देंगे। फिर से राणा जी बोलता है, "मुझे कुछ नहीं चाहिए"। पर उस बच्चे के पिता बोलते हैं, "तुमने हमारे बच्चे की जान बचाई है, रुको तुम इधर ही रुको मैं तुम्हारे लिए कुछ उपहार लेकर लाता हूं "।

वह घर के अंदर जाते है और एक किताब लेकर बाहर आते है और उसे राणा जी को दे देते है और बोलते है, "यह मेरी तरह से एक छोटी सी भेंट है, तुम इसे मेरी तरफ से एक छोटा सा उपहार समझ कर रख लो। " उस दिन के बाद राणाजी हर दिन उस किताब को पढ़ता है। उसे वह किताब बहुत पसंद आती थी। अब उसे अपने अनाथ होने पर कोई दुख नही होता था, क्योंकि वह समझता था कि अगर वह अनाथ ना होता तो दूसरों की तकलीफों को कैसे समझता, दूसरों की मदद कैसे कर पाता।

- पलक्षा, ६ अ
विक्रमशिला सदन

महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व व पशु पक्षी से प्रेम

आर्यन चौहान

आधुनिक युग की 'मीरा' कही जाने वाली महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में होली के दिन 1907 में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा उज्जैन में हुई और एम. ए. उन्होंने संस्कृत में प्रयाग विश्वविद्यालय से किया। बचपन से ही चित्रकला, संगीतकला और काव्यकला की ओर उन्मुख महादेवी विद्यार्थी जीवन से ही काव्य प्रतिष्ठा पाने लगी थीं। वह बाद के वर्षों में लंबे समय तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या रहीं। वह इलाहाबाद से प्रकाशित 'चाँद' मासिक पत्रिका की संपादिका थीं और प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' नामक संस्था की संस्थापक भी थी।

'निराला वैशिष्ट्य' की स्वामिनी महादेवी वर्मा छायावाद की चौथी स्तंभ भी कही जाती हैं। प्रणय एवं वेदनानुभूति, जड़ चेतन का एकात्म्य भाव, सौंदर्यानुभूति, मूल्य चेतना, रहस्यात्मकता उनकी मुख्य काव्य-वस्तु है। वह प्रधानतः गीति कवयित्री हैं जिनके काव्य में परंपरा और मौलिकता का अद्वितीय समन्वय नज़र आता है।

शब्द-निरूपण, वर्ण-विन्यास, नाद-सौंदर्य और उक्ति-सौंदर्य-सभी दृष्टियों से वह भाषा पर सहज अधिकार रखती हैं। उन्होंने अपने काव्य में प्रतीकात्मक संकेत-भाषा का प्रयोग किया है जिसमें छायावादी प्रतीकों के साथ ही मौलिक प्रतीकों का भी कुशल प्रयोग हुआ है। उनका वर्ण-परिज्ञान उनके बिंब-विधान की प्रमुख विशेषता है। चाक्षुष, श्रव्य, स्पर्शिक बिंबों में उनकी विशेष रुचि रही है। अप्रस्तुत के माध्यम से प्रस्तुत के साम्य गुणों का चित्रण वह बख़ूबी करती हैं। रूपक, अन्योक्ति, समासोक्ति तथा उपमा उनके प्रिय अलंकार हैं। उनके संबंध में कहा गया है कि छायावाद ने उन्हें जन्म दिया था और उन्होंने छायावाद को जीवन दिया।

उन्होंने कविताओं के साथ ही रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, डायरी आदि गद्य विधाओं में भी योगदान किया है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत', 'यामा', 'दीपशिखा', 'साधिनी', 'प्रथम आयाम', 'सप्तपर्णा', 'अग्निरेखा' उनके काव्य-संग्रह हैं। रेखाचित्रों का संकलन 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में किया गया है। 'शृंखला की कड़ियाँ', 'विवेचनात्मक गद्य', 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध', 'संकल्पिता', 'हिमालय', 'क्षणदा' उनके निबंधों का संकलन है।

वह साहित्य अकादमी की सदस्यता प्राप्त करने वाली पहली लेखिका थीं। भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण और पद्म विभूषण पुरस्कारों से सम्मानित किया। उन्हें यामा के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उनके सम्मान में जयशंकर प्रसाद के साथ युगल डाक टिकट भी जारी किया। महादेवी वर्माजी को पशु - पक्षियों के प्रति सहज लगाव था । उन्होंने कुत्ते - बिल्ली जैसे पशु पाल रखे थे । इतना ही नहीं अपने पशु जगत में हिरनों के प्रति भी काफी ममत्व था । उनके मन में प्राणियों के प्रति करुणा की प्रबल भावना थी । एक बार महादेवी वर्माजी ने एक हिरण - शावक को पाल रखा था । उसका नाम सोना रखा था । सोना के अनाथ शिशुरुप को देखकर महादेवीजी अपनी ममता को रोक नहीं पाती । वे इसे पालना स्वीकार कर लेती है । महादेवी वर्मा उसे रात में अपने पलंग के पास ही रखती थी । सोना लेखिका के स्नेह से अच्छी तरह परिचित थी । उसे लेखिका से जरा भी डर नहीं लगता था । इसलिए सोना हिरणी अपना शरीर उनके पैरों से रगड़ती है । महादेवीजी सोना की बाल सुलभ चेस्टाओं से आनन्दित होती है । सोना हिरणी जब महादेवीजी की साड़ी को अपने मुँह में भर लेती है , तब वे उसे डाँटती नहीं और न ही वैसा करने से मना करती है । इतना ही नहीं सोना कभी -कभी उनकी चोटी भी चबाती है, तो भी महादेवीजी उसे नहीं रोकती है । इस प्रकार महादेवीजी का मातृवत्त वात्सल्य दिखाई देता है । महादेवीजी का पशुओं के प्रति स्नेह का दर्शन ही सोना द्वारा होता है ।

- शुभम शर्मा, सातवीं ब, तक्षशिला सदन

मानवता की सेवा में जानी-मानी हस्ती- मदर टेरेसा

अभिनव बिष्ट, 10 ब

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को मेसिडोनिया की राजधानी स्कोप्जे शहर में हुआ। 'एग्नेस गोंझा बोयाजिजू' के नाम से एक अल्बेनियाई परिवार में उनका लालन-पालन हुआ। उनके पिता का नाम निकोला बोयाजू और माता का नाम द्राना बोयाजू था। मदर टेरेसा का असली नाम 'एग्नेस गोंझा बोयाजिजू' था। अलबेनियन भाषा में 'गोंझा' का अर्थ 'फूल की कली' होता है। वे एक ऐसी कली थी, जिन्होंने गरीबों और दीन-दुखियों की जिंदगी में प्यार की खुशबू भरी। वे अपने पांच भाई-बहनों में सबसे छोटी थी। टेरेसा एक सुन्दर, परिश्रमी एवं अध्ययनशील लड़की थीं। टेरेसा को पढ़ना, गीत गाना बहुत पसंद था। उन्हें यह अनुभव हो गया था कि वे अपना सारा जीवन मानव सेवा में लगाएंगी। उन्होंने पारंपरिक वस्त्रों को त्यागकर नीली किनारी वाली साड़ी पहनने का फैसला किया और तभी से मानवता की सेवा के लिए कार्य आरंभ कर दिया। मदर टेरेसा आयरलैंड से 6 जनवरी 1929 को कोलकाता में 'लोरेटो कॉन्वेंट' पंहुचीं। इसके बाद मदर टेरेसा ने पटना के होली फैमिली हॉस्पिटल से आवश्यक नर्सिंग ट्रेनिंग पूरी की और 1948 में वापस कोलकाता आ गईं।

1948 में उन्होंने वहां के बच्चों को पढ़ाने के लिए एक स्कूल खोला और बाद में 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना की जिसे 7 अक्टूबर 1950 को रोमन कैथोलिक चर्च ने मान्यता दी।

मदर टेरेसा की मिशनरीज संस्था ने 1996 तक करीब 125 देशों में 755 निराश्रित गृह खोले,जिससे करीबन 5 लाख लोगों की भूख मिटाई जाने लगी। टेरेसा ने 'निर्मल हृदय' और 'निर्मला शिशु भवन' के नाम से आश्रम खोले। 'निर्मल हृदय' आश्रम का काम बीमारी से पीड़ित रोगियों की सेवा करना था, वहीं 'निर्मला शिशु भवन' आश्रम की स्थापना अनाथ और बेघर बच्चों की सहायता के लिए हुई, जहां वे पीड़ित रोगियों व गरीबों की स्वयं सेवा करती थीं।

- अदिति भार्गव, आठ अ, तक्षशिला सदन

बच्चों की कलम से

मां

मां वह है जिसने हमें जन्म दिया,
जिसने हमें जन्म देने के लिए खुद दुख दर्द सहा।

लड़ती है वह सारे जहान से हमारे लिए,
मां वह है जो खुद भूखी रहकर अपने बच्चों का पेट भरती है।

इस जहान में मां से बढ़कर कोई नहीं,
इस संसार में मां की ममता की जगह
कुछ नहीं।

जिसके पास मां और मां की ममता है,
वह मनुष्य अपने जीवन में सबसे
अधिक धनवान है।

- अक्षा अहमद, 9 अ
नालंदा सदन

परीक्षा

परीक्षा का दिन आया है,
बच्चों को खूब सताया है।

हिंदी ,अंग्रेजी ,गणित और विज्ञान,
सभी को संग लाया है।

इन विषयों के भय ने बच्चों को बड़ा सताया है,
परीक्षा का दिन आया है
बच्चों को खूब सताया है।

किस विषय में कितने अंक आएंगे,
यह सोच सोचकर बच्चों का सिर चकराया है।
परीक्षा का दिन आया है।

अपने संग डर और चिंता लाया है,
परीक्षा के डर से बच्चों का दिल घबराया है।
परीक्षा का दिन आया है।

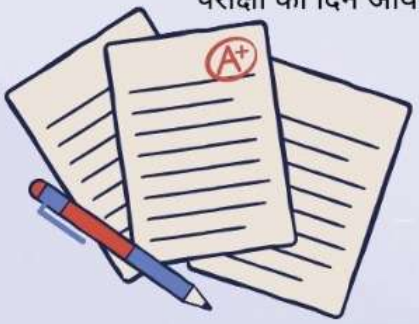

- सत्यम पंत, 9 अ
विक्रमशिला सदन

बाल मजदूरी

वो मिट्टी से लिपे हाथ, आंखों में
मासूमियत, चेहरा परेशान।
दिमाग में ना कोई सपना, ना कोई
पढ़ाई के अल्फाज़।

दो वक्त की रोटी, कपड़ा, और
मकान,
अपने परिवार की एक आशा पूरी
करने निकला वह नन्हा मेहमान।

और बच्चों को देखे स्कूल जाते,
लेकिन खुद ना जा पाया वह।
पढ़ने की इच्छा थी, लेकिन खुद न
पढ़ पाया वह।

- तनुजा. 8 अ, विक्रम शिला

आओ रोके इस बाल मजदूरी को मिलकर हम।

- सानिया बारी, ८ ब

अकेलेपन का बल पहचान

शब्द कहां जो तुमको टोके,
हाथ कहां जो तुमको रोके।
राह वही है जिधर तू करे प्रस्थान।
अकेलेपन का बल पहचान।
तन- मन अपना जीवन अपना ,
अपना ही जीवन का सपना।
जब चाहे और जहां चाहे तू
करदे सब कुछ बलिदान।
अकेलेपन का बल पहचान।

- अमीन 9 अ
पंचशिला सदन

पेड़ से ही जीवन है

पेड़ हमें जीने के लिए साफ हवा देते।
यह हमारे जीवन की जरूरतें पूरी करते।
खाने पीने के लिए चीजें प्रदान करते।
अगर पेड़ न होते तो हम क्या करते?
अगर पेड़ न होते तो हम भी ना होते।
हमें सांस लेने के लिए हवा है यह देते।
अगर पेड़ न होते तो हम जीवित ना रहते।
इसलिए पेड़ों को बचाकर अपने आप को बचाए।
क्योंकि बस पेड़ों से ही है जीवन।

अक्षा अहमद, 9 अ
नालन्दा सदन

खुशियों का त्यौहार होली

होली को रंगों के त्यौहार के रूप में जाना जाता है। यह भारत में सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। होली हर साल मार्च के महीने में हिंदू धर्म के अनुयायियों द्वारा जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। जो लोग इस त्यौहार को मनाते हैं, वे रंगों से खेलने और स्वादिष्ट व्यंजन खाने के लिए हर साल इसका बेसब्री से इंतजार करते हैं।होली दोस्तों और परिवार के साथ खुशियां मनाने का त्यौहार है। लोग अपनी परेशानियों को भूलकर भाईचारा मनाने के लिए इस त्यौहार में शामिल होते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो हम अपनी दुश्मनी भूल जाते हैं और उत्सव की भावना में डूब जाते हैं। होली को रंगों का त्यौहार कहा जाता है क्योंकि लोग रंगों से खेलते हैं और एक-दूसरे के चेहरे पर लगाते हैं।

होली का इतिहास

हिंदू धर्म का मानना है कि बहुत पहले हिरण्यकश्यप नाम का एक शैतान राजा था। उसका प्रह्लाद नाम का एक बेटा और होलिका नाम की एक बहन थी। ऐसा माना जाता है कि शैतान राजा को भगवान ब्रह्मा का आशीर्वाद प्राप्त था। इस आशीर्वाद का मतलब था कि कोई भी आदमी, जानवर या हथियार उसे नहीं मार सकता था। यह आशीर्वाद उसके लिए अभिशाप बन गया, क्योंकि वह बहुत अहंकारी हो गया था। उसने अपने बेटे को भी नहीं बख्शा और उसे भी भगवान के बजाय उसकी पूजा करने का आदेश दिया।

इसके बाद, उनके पुत्र प्रह्लाद को छोड़कर सभी लोग उनकी पूजा करने लगे। प्रह्लाद ने भगवान के बजाय अपने पिता की पूजा करने से इनकार कर दिया क्योंकि वह भगवान विष्णु का सच्चा भक्त था। उसकी अवज्ञा को देखकर, शैतान राजा ने अपनी बहन के साथ मिलकर प्रह्लाद को मारने की योजना बनाई। उसने उसे अपने बेटे के साथ गोद में आग में बैठा दिया, जहां होलिका जल गई और प्रह्लाद सुरक्षित निकल आया। यह इंगित करता है कि वह अपनी भक्ति के कारण अपने भगवान द्वारा संरक्षित था। इस प्रकार लोग होली को बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाने लगे।

होली के शुभ अवसर पर हमें सभी को प्यार से गले लगाना चाहिए और खुशियां बाटनी चाहिए। हमें इस दिन दोस्तों और दुश्मनो को भी गले लगाना चाहिए। दोस्तों और दुश्मनो में फर्क नहीं करना चाहिए। हमें कीचड़, टमाटर, पानी और हानिकारक रंगों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे कई लोगो को समस्या हो सकती हैं। हमें पानी भी बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमें सावधानीपूर्वक एवं सम्मानजनक तरीके से बिना किसी चीज़ को बर्बाद किये होली मनानी चाहिए।

हमेशा मीठी रहे आपकी बोली,
खुशियों से भर जाये आपकी झोली ,
आप सबको मुबारक हो होली।

- अंजलि नेगी, 10 ब
तक्षशिला सदन

तौहिद, 7 ब

वरुण विष्ट, 11 विज्ञान

समीक्षा, 10 ब

अनुष्का, 7 ब

होली

होली रे होली
आया रंगों का त्यौहार,
बिखेरे सब प्यार।

होली रे होली
झूमे नाचे गाए
और खाए
खूब मिठाई।

होली रे होली
हवा में उड़ते रंग
एक दूजे को लगाए लोग
रंग।

होली रे होली
बच्चे भर-भर पिचकारी
और गुब्बारे एक दूजे पर
फेंके।

होली रे होली
बड़े बुजुर्ग करें वो दिन
याद,
जब वह खूब खेले थे
होली और खाए थे मिठाई।

होली रे होली
आया खुशियों का त्यौहार

- अभिषेक पटवाल 9 A

कफन (समीक्षा)

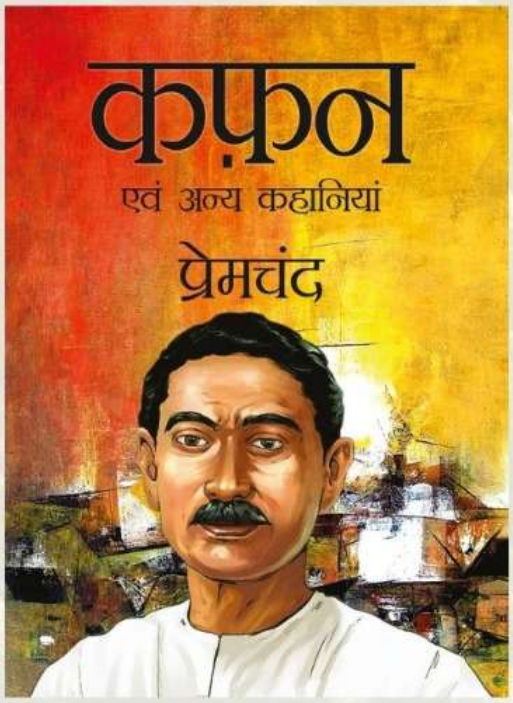

कफन कहानी मुंशी प्रेम चंद की रचना है। प्रेमचंद जी के साहित्य को पढ़ते वक्त ऐसा कभी नहीं लगता कि हम किसी पुस्तक की कहानी पढ़ रहे हैं, बल्कि यह एहसास होता है मानो पुस्तक में वर्णित कथानक कहीं ना कहीं हमारे इर्द-गिर्द घट रहा है। उनके लेखन में कोई भी कमी नहीं निकाल सकता। उनकी रचनाओं में समाज की स्थिति एवं देश की परिस्थितियों का चित्रण इतनी सटीकता से किया गया है, कि पाठक रचना को पढ़ते-पढ़ते स्वयं को उसका अंग ही समझने लगता है। चुंकि मैं एक साल जामिया मिलिया इस्लामिया का छात्र रहा हुं इसलिए वहाँ से प्राप्त जानकारी के अनुसार मुंशी प्रेमचंद ने अपने प्राध्यापक मित्र के कहने पर यह कहानी जामिया मिलिया इस्लामिया के कैंपस में लिखी थी। उस समय उनके मित्र जामिया मिलिया इस्लामिया में हिंदी विभाग में प्रोफेसर थे।

कहानी इस प्रकार है

कहानी बाप बेटे (घीसू और माधव) दो अब्बल दर्जे के आलसी और दारुबाज पर आधारित है।

घर में बहू बुधिया प्रसव पीड़ा से कराह रही थी और दोनों बाप-बेटे मस्ती ले रहे थे।

बुधिया के मरने पर दोनों कफ़न के लिए भिखमंगी करते हैं।

बाप-बेटे का यह संवाद आज भी रोंगटे खड़े कर देता है.....

माधव बोला- 'हाँ, लकड़ी तो बहुत है, अब कफ़न चाहिए।

'तो चलो, कोई हल्का-सा कफ़न ले लें।'

'हाँ, और क्या, लाश उठते-उठते रात हो जाएगी। रात को कफ़न कौन देखता है?'

'कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढाँकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए।'

'कफ़न लाश के साथ जल ही तो जाता है।'

अंत में दोनों बाप बेटे एक ठेके के दुकान पर बैठ कर कफ़न के पैसे से खूब सारा दारू और चखना का आनंद लेते हैं।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह कहानी हमारे विद्यार्थियों को काफी पसंद आएगी। यदि हमारे विद्यार्थी नाटक का मंचन करें तो एक अच्छी प्रस्तुति हो सकती है।

- अजीत मिश्रा

बेटियां किसी से कम नहीं

भारत में बेटियों को अलग महत्व दिया जाता है। बीते जमाने में बेटियों का बचपन में ही हाथ पीले कर ससुराल में भेज दिया जाता था। उनकी भूमिका सिर्फ रसोई घर तक सीमित रह जाती थी। देश में आज भी कई स्थानों पर आंशिक रूप से यह कुप्रथा जारी है लेकिन अब लोगों की सोच बदल चुकी है, इसलिए लोगों को जागरूक करने के लिए भी बेटी दिवस का काफी महत्व है।

कुछ जगहों पर तो अभी भी लड़कों एवं लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। बेटियों के पैदा होने पर उन्हें कहीं छोड़ दिया जाता है या फिर मार दिया जाता है, जबकि पुत्र के पैदा होने पर खूब मिठाइयां बांटी जाती है, भले ही बड़ा होकर वह कितने ही दुष्कर्म करे। लोगों का आज भी यह समझना जरूरी है कि लड़कियां किसी से कम नहीं और वह भी लड़कों से सिर्फ कंधे से कंधा मिलाकर ही नहीं बल्कि उनसे बहुत आगे चल रही है। किरण बेदी, बछेंद्री पाल, कल्पना चावला आदि विश्व विख्यात हस्तियां आज किसी भी परिचय का मोहताज नहीं हैं। लड़कियों के महत्व को समझते हुए उन्हें सम्मान देने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने पहली बार 11 अक्टूबर 2012 को एक दिन बेटियों को समर्पित किया। इसके बाद से ही हर देश में बेटियों के लिए एक दिन समर्पित किया जाने लगा।

जिस परिवार में बेटियां होती हैं उन्हें तो खुद को भाग्यशाली समझना चाहिए, क्योंकि भले ही बेटा मां बाप को प्रेम करे न करे लेकिन बेटियां तो बिना मांगे माता-पिता पर जान छिड़कती है।वह मायके एवं ससुराल दोनों घरों को साथ में संभालती हैं। बेटियां घर की सुख-समृद्धि का कारण होती है, ऐसे ही थोड़ा उन्हें घर की लक्ष्मी तथा देवी भगवती का रूप माना जाता है। सिर्फ एक दिन ही नहीं बल्कि वर्ष का हर दिन बेटियों के सम्मान एवं प्रेम से परिपूर्ण होना चाहिए और उनका सम्मान करने की शिक्षा बेटों को भी देनी चाहिए।

- दुर्गम्या गुप्ता, १२ वाणिज्य, नालंदा सदन

देश के प्रमुख समाज सुधारक

स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती एक समाज सुधारक थे। उन्होंने हिंदू धर्म के कई अनुष्ठानों के खिलाफ प्रचार किया, साथ ही साथ उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। उन्होंने एक स्वदेशी रूप से एक नए समाज व आर्थिक और राजनीतिक दल की शुरुआत की।

राजा राममोहन राय

राजा राममोहन राय पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कुप्रथाओं के खिलाफ लड़ने का फैसला किया। उन्होंने सती , बाल विवाह और जाति व्यवस्था के रूप में हिंदू रीति रिवाजों के खिलाफ धर्म युद्ध किया था। राजा राममोहन राय ने महिलाओं के लिए संपति विरासत के अधिकार की भी मांग की थी।

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने किसी विशेष सामाजिक सुधार की शुरुआत नहीं की थी। उनके भाषण और लेखन सभी प्रकार की सामाजिक और धार्मिक बुराइयों के खिलाफ थे। उनका मुख्य ध्यान उस समय के भारतीय युवाओं की शारीरिक और मानसिक कमजोरी को दूर करने पर था।

साहित्यकार वीरसालिगंम पंतुलु

वीरसालिगंम पंतुलु साहित्य के आधुनिक काल में प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उन्होंने महिलाओं की मुक्ति के लिए व्यापक रूप से लिखा था । उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत की और बाल विवाह की निंदा की। इसके साथ ही उन्होंने कम उम्र की लड़कियों की शादी अधिक उम्र के पुरुष से करने की प्रथा की भी निंदा की।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर एक भारतीय, सामाजिक और राजनीतिक समाज सुधारक थे। उन्होंने दलित बुद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था।

महात्मा ज्योतिबा फुले

ज्योतिबा फुले ने अपना पूरा जीवन समाज के कमजोर और दबे हुए वर्ग के लिए समर्पित कर दिया था। वह बाल विवाह के विरुद्ध और पुनर्विवाह के बड़े समर्थक थे। उनकी पत्नी सावित्रीबाई फूले ने बच्चों के लिए स्कूल भी बनाया था ।

इरोड वेंकटप्पा रामास्वामी

इरोड वेंकटप्पा रामास्वामी को पेरियार नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने जस्टिस पार्टी का गठन किया जिसका सिद्धान्त जातिवादी एवं गैर बराबरी वाले हिंदुत्व का विरोध था।

दार्शनिक ईश्वर चंद्र विद्यासागर

एक बंगाली बहुमुखी प्रतिभा के धनी ईश्वर चंद्र विद्यासागर एक भारतीय समाज सुधारक थे। उन्होंने अंग्रेजों को विधवाओं के पुनर्विवाह अभियान को परित करने के लिए मजबूर किया था।

- तनुजा, 8 अ, विक्रमशिला सदन

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस

भारत में हर साल 4 मार्च के दिन राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस मनाया जाता है. इस दिन को मनाए जाने का मुख्य उद्देश्य हमारे जीवन के विभिन्न समयों में जागरूकता न होने या ध्यान न देने के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोकना है। पहले से मनाए जाने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस को अब राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह के रूप में मनाया जाने लगा है। इस सप्ताह के दौरान विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से औद्योगिक दुर्घटनाओं से बचाव के तरीको से लोगों को अवगत कराया जाता है। इस पूरे सप्ताह में की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि का एक मात्र उद्देश्य लोगों को उनकी सुरक्षा के लिए जागरूक कर उन्हे सुरक्षा के विभिन्न तरीको से अवगत कराना होता है।

- क्यारी गुप्ता, 7 ब

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265
संपादक - डॉ. बबिता गुप्ता, डिजाइन - विशाल लोधा